अथ षोडशोऽध्यायः

दैवासुरसम्पद्विभागयोग

(दैवी और आसुरी स्वभाव)

श्रीभगवानुवाच।
अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।।१।।
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्।।२।।
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत।।३।।

श्रीभगवान् उवाच=श्रीभगवान् ने कहा; **अभयम्**=निर्भयता; **सत्त्वसंशुद्धिः**=अन्तःकरण की शुद्धि; **ज्ञानयोगव्यवस्थितिः**=ज्ञान के उपाय में निष्ठा; **दानम्**=दान; **दमः**=इन्द्रियों का संयम; **च**=तथा; **यज्ञः**=यज्ञों का अनुष्ठान; **च**=तथा; **स्वाध्यायः**=वैदिक शास्त्रों का अध्ययन; **तपः**=तपस्या; **आर्जवम्**=सरलता; **अहिंसा**=किसी भी प्राणी को कष्ट न पहुँचाना; **सत्यम्**=यथार्थ भाषण; **अक्रोधः**=क्रोध का अभाव; **त्यागः**=त्याग; **शान्तिः**=मन का संयम; **अपैशुनम्**=दूसरों में दोष-दृष्टि न रखना; **दया**=करुणा; **भूतेषु**=सब जीवों में; **अलोलुप्त्वम्**=लोभ का अभाव; **मार्दवम्**=कोमलता; **ह्रीः**=लज्जा; **अचापलम्**=दृढ़ निश्चय (व्यर्थ चेष्टाओं का अभाव); **तेजः**=तेज; **क्षमा**=क्षमा; **धृतिः**=धैर्य; **शौचम्**=पवित्रता; **अद्रोहः**=ईर्ष्या से मुक्त; **न अति-**